अक्टूबर-दिसंबर, 2021

Digital News Letter

पुनर्नवा

..bouncing back to life again and again....

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिरकण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

नाव दुर्घटना से बचाव

नाव दुर्घटना में बहुमूल्य जिंदगियाँ खत्म हो जाती हैं। हमसब इसे रोक सकते हैं, अगर हम बचाव के निम्न उपाय कर लें तोः-

नाव की सवारी करने वाले कृपया ध्यान दें:-

जिस नाव पर पंजीकरण संख्या अंकित हो उसी नाव से यात्रा करें।
नाव चलने से पहले देख लें कि भार आरेख का निशान डूबा तो नहीं है।
अगर डूबा है तो तुरंत उतर जाएं।
जब मौसम खराब हो तो नाव की यात्रा न करें।
जिस नाव पर जानवर ढोये जा रहे हों, उसमें यात्रा न करें।
सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद नाव की यात्रा न करें। यह खतरनाक हो सकता है।

नाविक या नाव मालिक कृपया ध्यान दें-

जब तेज हवा/खराब मौसम/आँधी/बारिश हो तो नाव का संचालन न करें।
लाईफ जैकेट, लाईफबॉय के साथ प्राथमिक उपचार बॉक्स एवं रस्से आदि ठीक तरीके से नाव पर रखना अनिवार्य है।
15 से 30 सवारी नाव पर 2 नाविक एवं 30 से अधिक सवारी वाली नाव पर 3 नाविकों का होना अनिवार्य है।
नाव से पानी निकालने/उलीचने के लिए नाव में आवश्यक बर्तन रखें।
रात में नाव का परिचालन न करें। यदि आवश्यक हो तो सक्षम प्राधिकार की अनुमति प्राप्त कर विशेष रोशनी के साथ करें।

जिला प्रशासन कृपया ध्यान दें

बिना निबंधन के कोई भी नाव चाहे वह किसी भी उद्देश्य (व्यक्तिगत/संस्थागत) के लिए प्रयोग की जा रही हो, उसका परिचालन गैर कानूनी है।
सुनिश्चित किया जाए कि नावों पर भार आरेख (सफेद पट्टी) का निशान हर हाल में अंकित हो।
नाव संचालन के संबंध में बिहार सरकार के बंगाल नौ-घाट अधिनियम, 1885 के अधीन आदर्श नोका नियमावली, 2011 के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए।
नजदीकी पुलिस थाना और प्रशिक्षित गोताखोरों का संपर्क नंबर घाटों पर अवश्य प्रदर्शित कराया जाए।

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पे. न.
01	संपादकीय	01
02	कोरोना संकटः ऐसे निपटा आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कर्मचारियों ने	02
03	गतिविधियां प्राधिकरण की	03
04	'इनसे मिलिए कार्यक्रम'	05
05	मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम	06
06	भूकंपरोधी निर्माण तकनीक से संबंधित प्रशिक्षण	06
07	जीविका दीदियों का आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण	06 07
08	सुरक्षित तैराकी प्रशिक्षण मॉड्यूल में संशोधन के लिए बैठक	08
09	बहु-आपदा जोखिम एवं न्यूनीकरण विषय पर सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण	09
10	गंभीर रेल दुर्घटनाओं के प्रबंधन में भूमिका निर्धारण के लिए SOP पर विमर्श	10
11	जिला न्यायलय, मुंगेर के आपदा प्रबंधन कार्ययोजना के लिए बैठक	11
12	अंशुल स्नैक्स एवं विवरेज में ब्यॉलर विस्फोट पर अध्ययन	11
13	अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम-प्रगति	12
14	आपात स्थिति में पशु प्रबंधनः पशुधन सहायकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण	13
15	हीट वेव पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन	14
16	जिला आपदा प्रबंधन योजना के लिए समीक्षा बैठक	14
17	BSDRN की समीक्षा एवं मास मैसेजिंग	15
18	हिंदी दिवस	16
19	खबरें तस्वीरों में	26

पुनर्नवा
अक्टूबर-दिसंबर, 2021

पुनर्नवा

संपादकीय

आपदा प्रबंधन के विभिन्न कार्यक्रमों के साथ साथ प्राधिकरण में कई नए प्रयोग शुरू हुए हैं। इससे जहां प्राधिकरण की गतिविधियां तेज हुई हैं वही प्राधिकरण कर्मियों के कामकाज में भी व्यापक परिर्वतन हुए हैं। आपदा प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी/स्थिति में सुधार के लिए महिलाओं की समिति का गठन, मंत्रियों से मिलने का कार्यक्रम, काम काज को ऑनलाइन करने, पुस्तकालय की स्थापना आदि कर्मियों के सीधे अथवा गुप्त शिकायत के लिए ''मुझे भी कुछ कहना है'' सुझाव पेटी लगाना, मोटिवेशनल स्पीच के लिए'' इनसे मिलिये'' कार्यक्रम के तहत प्रतिमाह एक चर्चित व्यक्तित्व के संबोधन का कार्यक्रम समेत कई अन्य कार्यक्रम शुरू हुए हैं। ''इनसे मिलिए'' कार्यक्रम के तहत पूर्व डीजीपी डा0 डीएन गौतम, पूर्व आइ.ए.एस. श्री विजय शंकर दुबे, जानेमाने पत्रकार श्री सुरेंद्र किशोर और वरिष्ठ पत्रकार श्रीकांत के द्वारा प्राधिकरण कर्मियों से अपना अनुभव साझा किया गया है।

कार्यक्रमों का प्रभाव कर्मियों के कामकाज पर स्पस्ट रूप से देखा जा सकता है. इस अवधि में ही कर्मियों और अधिकारियों के कामकाज में और निखार लाने के लिए कॉरपोरेट विशेषज्ञ उमा अरोड़ा प्राधिकरण के कर्मियों और अधिकारियों को कामकाज के दौरान बेहतर व्यवहार/शिष्टाचार अपनाने के लिए विस्तार से जानकरी ही नहीं दिया, बल्कि बातचीत के क्रम में ही कई महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत भी कराया। इसका प्रभाव प्राधिकरण के कामकाज में गुणात्मक सुधार के रूप देखा जा सकता है। सितंबर 2021 में प्राधिकरण कार्यालय में पहली बार हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में पटना से बाहर के भी कई कवि शामिल हुए। वहीं प्राधिकरण के कई कर्मियों ने पहली बार आयोजित इस कवि सम्मेलन में कविता पाठ कर श्रोताओं को चकित कर दिया। प्राधिकरण कर्मियों की सुविधा को देखते हुए कार्यालय अवधि सुबह नौ बजे से शाम के साढ़े पांच बजे तक करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। इस निर्णय से जहां कर्मियों को सुबह में बिना जाम की समस्या के ऑफिस पहुंचने की सहुलियत मिली है, वहीं शाम में बिना जाम व कम प्रदूषण में घर लौटने से राहत मिली है। पंचायत चुनाव के बाद अब प्राधिकरण के कामकाज में तेजी आई है। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हो चुके हैं। कम्युनिटी वोलेंटियर का प्रशिक्षण शुरू हो चुका है। स्वाभाविक है प्राधिकरण के कामकाज में आये परिवर्तन का असर जल्द दिखेगा।

शशि भूषण तिवारी
(मुख्य संपादक)

विकास ऐसा हो जो आफ़त से बचाए,
ऐसा न हो जो कि आफ़त बल जाए।

संरक्षक मंडल

डॉ. उदय कान्त मिश्र, भा. अभि. से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

पी. एन. राय, भा. पु.से.(से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मीनेन्द्र कुमार, बि.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मुख्य संपादक: शशि भूषण तिवारी
उपाध्यक्ष के विशेष कार्य पदाधिकारी

वरीय संपादक: कुलभूषण कुमार गोपाल

संपादक मंडल

नीरज कुमार सिंह, सीनियर कंसल्टेंट
दिलीप कुमार, वरीय सलाहकार (मानव संसाधन एवं क्षमतावर्द्धन)
डॉ. जीवन कुमार, परियोजना पदाधिकारी
अशोक कुमार शर्मा, परियोजना पदाधिकारी
प्रवीण कुमार, परियोजना पदाधिकारी
जयंत रौशन, परियोजना पदाधिकारी
आई.टी: सुश्री सुम्बुल अफ़रोज
मनोज कुमार
ई-मेल: sr.editor@bsdma.org
वेबसाईट: www.bsdma.org
सोशल मिडिया : www.facebook.com/bsdma

नोट: पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखन द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

कोरोना संकटः ऐसे निपटा आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कर्मचारियों ने

कुलभूषण गोपाल
वरीय संपादक

कोविड संक्रमण की तीसरी लहर में आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कई कर्मचारी संक्रमित हो गये। एक साथ कई लोगों के संक्रमित होने से प्राधिकरणकर्मी परेशान थे। संक्रमण की सूचना मिलते ही प्राधिकरण द्वारा पटना जिला प्रशासन से इसकी जांच के लिए सहयोग मांगा गया। सहयोग की अपील पर जिला प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए प्राधिकरण कार्यालय में ही सभी कर्मचारियों और अधिकारियों की जांच का त्वरित इंतजाम किया। कुछ ही घंटे में जांच और बड़ी संख्या में कर्मियों के संक्रमित होने की जानकारी मिली। प्राधिकरण का कोई प्रभाग नहीं था, जहां कम से कम एक–दो कर्मी संक्रमित न हों। कार्यालय बंद करने की नौवत आ गयी। अचानक कर्मियों में संक्रमण की सूचना से खलबली मच गयी । कर्मचारियों को समझ में नहीं आ रहा था करें तो क्या करें? घर जायें तो परिवार के लोगों के लिए खतरा और बाहर जायें तो ठहरें कहां ? जो भी हो, सभी अपने स्तर से निपटने की तैयारी में जुट गये। इस बीच प्राधिकरण ऑफिस के कर्मियों को वाट्सएप्प ग्रुप के माध्यम से निर्देश दिया गया कि सभी कर्मचारी प्रतिदिन अपने स्वास्थ्य की जानकारी ग्रुप में साझा करें। चाहे उनके अपनी स्वास्थ्य की समस्या हो या उनके परिवार का हो। निर्देश का पालन करते हुए सभी कर्मियों ने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और परेशानी ग्रुप में साझा करना शुरू कर दिया। सभी को उनकी परेशानी के अनुसार सलाह मिलना शुरू हुआ। संक्रमित कर्मियों ने अपने लिए ही नहीं बल्कि अपने परिवार के सदस्यों के लिए भी इस ग्रुप के माध्यम से सलाह मशविरा करना शुरू कर दिया। उधर, जिला प्रशासन ने भी सभी संक्रमितों के लिए उनके नाम से बंद लिफाफे में दवा का पैकेट उपलब्ध करा दिया। कार्यालयकर्मी श्रवण कुमार, मनोरंजन, रविशंकर झा आदि के द्वारा दवाओं के पैकेट संक्रमितों तक पहुंचने लगे। यह प्रयोग लोगों में आत्मविश्वास पैदा किया। जैसे अब कोई इस संकट में अकेला नहीं है. मानो बीमारी की सामुहिक इलाज चल रहा हो। कोई इस संकट में अपने को अकेला महसूस नहीं कर रहा था। लग ऐसा रहा था कि कोई बेसहारा नहीं है। देखते ही देखते दर्जनों संक्रमित कर्मियों और उनके परिवार का यह ऑफिसियल ग्रुप परिवार के लोगों के लिए उपयोगी प्लेटफार्म बन गया। संक्रमण की चिंता के अलावा भी लोगों को यहां अभिभावकीय सलाह मिलने लगे। माहौल परिवारिक हो गया। देखते ही देखते संक्रमण की चिंता व्यापक प्राधिकरण परिवार की चिंता बन गयी। जो संक्रमण से परेशान थे, अब वे अपनी कुशलता की सूचना ग्रुप में देने लगे। आज प्राधिकरण के सभी संक्रमित स्वस्थ्य हो चुके हैं। वाट्सएप्प ग्रुप में संक्रमण की परेशानी की सूचना की जगह अब कुशल –क्षेम की सूचनाएं मिल रही हैं। सच है कि परेशानी कितनी ही बड़ी क्यों न हो, निपटने का तरीका परिवारिक या सामूहिक हो तो बड़ी से बड़ी समस्या आसानी से बिना किसी संत्राप के निपटा जा सकता है। कम से कम प्राधिकरण के इस प्रयोग ने तो साबित कर ही दिया है।

गतिविधियां प्राधिकरण की

मुझे भी कुछ कहना है

आमतौर पर सरकारी कार्यालयों में सभी की शिकायतों को सुनने और निराकरण के कम ही इंतजाम होते हैं। जहां इंतजाम हैं भी वहाँ शिकायतों को दूर करने की कार्रवाई समय पर नहीं होने की शिकायतें मिलती रहती हैं। इस समस्या से निपटने के लिए प्राधिकरण में बड़ी पहल की गयी। शिकायतों को दूर करने हेतु गुप्त रूप से शिकायत एवं सुझाव प्राप्त करने के लिए ''मुझे भी कुछ कहना है'' सुझाव पेटी लगाई गयी। इसका असर कुछ ही दिनों में दिखने लगा। तत्पश्चात् शिकायतें एवं सुझाव प्राप्त होने लगे। इन शिकायतों का निपटारा प्राधिकरण स्तर पर किया जाने लगा है। इसके लिए प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। इन शिकायतों के निवारण की वजह से ही कार्यालय में स्वच्छता और पेयजल की असुविधा दूर हो सकी। प्राप्त गुप्त शिकायतों में कार्यालय की सफाई से लेकर वेतनवृद्वि की समस्या तक शामिल थे। अब इसकी मोनिटरिंग नियमित हो रही है। इससे कर्मियों में खुशी है कि उनके शिकायतों को कोई नजरअंदाज नहीं कर सकेगा। उनकी जायज मांगें मान ली जायेगी। स्वाभाविक है आने वाले दिनों में प्राधिकरण के काम काज पर इसका बेहतर असर दिखेगा।

मंत्रियों से मिलने का कार्यक्रम

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कामकाज की जानकारी देने के लिए राज्य सरकार के सभी माननीय मंत्रियों से मिलने का कार्यक्रम शुरू किया गया है। चूंकि आपदा प्रबंधन के कामकाज राज्य सरकार के सभी विभागों से किसी न किसी रूप से संदर्भित हैं। इसलिए मा. मत्रियों को इसकी जानकारी मिलनी ही चाहिए। प्राधिकरण के मा. उपाध्यक्ष, मा. सदस्य, सचिव समेत अन्य अधिकारियों के द्वारा मा. मंत्रियों से मिलकर प्राधिकरण के कामकाज की जानकारी दी जा रही है। मा. मंत्रियों से मुलाकात के दौरान उनके क्षेत्र में भूकंप सुरक्षा क्लीनीक की स्थापना में सहयोग, उनके क्षेत्र में प्राधिकरण द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के फीडबैक देने का भी अनरोध किया जा रहा है। सभी माननीय मंत्रियों के क्षेत्र में चल रहे भुकंपरोधी भवन निर्माण के लिए राजमिस्त्रयों के प्रशिक्षण, प्रशिक्षित राजमिस्त्रयों की सूची सौंपने और सुरक्षित तैराकी, सड़क सुरक्षा के कार्यक्रम समेत अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी जा रही है। इस अभियान के तहत अब तक 16 मा. मंत्रियों से मुलाकात की जा चुकी है। मा. मंत्रियों ने तो कई मुद्दों पर कार्रवाई के लिए त्वरित निर्देश जारी कर आपदा प्रबंधन के कार्य में सहयोग का भरोसा भी दिया है। उनके आश्वासन और विभागीय अधिकारियों के सहयोगात्मक रूख से उम्मीद है कि जल्द ही यह अभियान आपदा प्रबंधन के कामकाज के लिए कारगर साबति होगा।

पुस्तकालय

ऑफिस में लगातार कामकाज के बीच थोड़ी मानसिक ताजगी की आवश्यकता महसूस होती है। पर, सभी कार्यालयों में ऐसी व्यस्था नहीं होती है। कर्मियों की इच्छा के अनुसार सितंबर में ही प्राधिकरण कार्यालय में पुस्तकालय की स्थापना कर दी गयी। कार्यालय में कर्मियों की सलाह पर बड़ी संख्या में पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी हैं। कई पत्रिकाएं और प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पत्रिकाएं भी पुस्तकालय में उपलब्ध कराये जा रहे हैं। खुशी की बात यह है कि लगभग सभी कर्मचारी अपनी इच्छा के अनुसार चर्चित लेखकों की पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं आदि का अध्ययन कर रहे हैं। कामकाज के साथ कर्मियों को मानसिक खुराक मिल रही है। प्राधिकरण कार्यालय में पुस्तकालय का यह प्रयोग कर्मियों के लिए वरदान साबित हो रहा है। आने वाले समय में यह कर्मियों के व्यक्तित्व में विकास ही नहीं बल्कि प्राधिकरण के कामकाज में भी गुणात्मक असर लायेगा।

प्राधिकरण कर्मियों की लेखन क्षमता में वृद्धि का कार्यक्रम और ऑनलाइन ऑफिस

सितंबर 2022 में ही प्राधिकरण कर्मियों के हित में निर्णयों और घोषणाओं में कर्मियों के लेखन क्षमता बढ़ाने के लिए एक वाट्सएप्प ग्रुप 'ऑफिस बी.एस.डी.एम.ए.' बनाया गया। सभी कर्मियों को प्रतिदिन चार–पांच लाइन हिंदी और अंग्रेजी में लिखने का निर्देश दिया गया। निर्देश का असर यह हुआ कि देखते ही देखते प्राधिकरण के अधिकांश कर्मचारी इस ग्रुप में हिंदी और अंग्रेजी में लिखना शुरू कर दिये। ग्रुप में लिखने वाले अधिकांश कर्मियों की लेखन क्षमता पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुई है जिससे उन्हें प्राधिकरण के ऑनलाइन ऑफिस के काम को बेहतर तरीके से करने में मदद मिलेगी।

e ffice
Govt. of Bihar
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

विशेष कार्यक्रमः 'इनसे मिलिए'

''इनसे मिलिए कार्यक्रम'' के तहत विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों, अनुभवी और अपने क्षेत्र में कृतिमान कायम करने वाले व्यक्तित्व से प्राधिकरण परिवार के सदस्यों का साक्षात्कार होता है। इस कार्यक्रम के तहत पहले वक्ता और बिहार के पूर्व डी.जी.पी. डा. डी.एन.गौतम बने। 30 सितंबर, 2021 को आयोजित इस पहले कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कर्मियों के साथ अपने मानवीय विचारों को साझा किया। उन्होंने कहा कि नैतिक नियम और कानून जो समाज के द्वारा हमपर आरोपित होते हैं, वे राजकीय कानून से बहुत ज्यादा प्रभावशाली और बाध्यकारी होते हैं। जब हम नैतिक मूल्यों को मानने में विफल होते हैं तो हम में एक विषाद पैदा होता है। उन्होंने कहा कि आवश्यकता से अधिक संसाधनों का संग्रह एक तरह से दूसरों के प्रति हिंसा है। मनुष्य हमेशा युद्धरत रहता है। युद्ध अंदर और बाहर दोनों जगह होता है। अपने अंदर के युद्ध या द्वन्द्व से जीतना जरूरी है। अर्थात जो धर्म क्षेत्र को जीत लेता है वह कुरुक्षेत्र भी जीत लेता है।

पूर्व मुख्य सचिव, श्री विजय शंकर दुबे ने 25 नवंबर, 2021 को आयोजित इस कार्यक्रम में कहा यदि इमानदारी से कोई काम किया जाए तो कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती है। यदि कोई बाधा उत्पन्न भी होती है तो उसका समाधान आसानी से हो जाता है। पटना जिला के जिलाधिकारी रहते हुए आपातकाल जैसे कठिन दौर में की गई कार्रवाइयों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कई बार जेपी ने भी प्रशासनिक कार्रवाई पर संतोष व्यक्त किया था। यह उनके द्वारा निरपेक्ष भाव से की गई कार्रवाई की वजह से संभव हो सका। उन्होंने कहा व्यक्तिगत जीवन में संसाधनों के दुरूपयोग से बचना चाहिए अन्यथा वह दूसरों के प्रति अन्याय है। यही मेरे जीवन का मूल मंत्र भी है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्रीकांत ने कहा की इमानदारी से किया गया कार्य कभी ओझल नही होता है। इसका उदाहरण श्रीदूबे हैं।

13 दिसंबर, 2021 को आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार और जनसत्ता, दैनिक हिन्दुस्तान, आज आदि अखबारों में महत्वपूर्ण भूमिका में रहें श्री सुरेन्द्र किशोर ने कहा कि जैसी सरकार होती है वैसी ही उस राज्य की पत्रकारिता भी होती है। जेपी आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले और कर्पूरी ठाकुर के साथ कार्य करने वाले श्री सुरेन्द्र किशोर ने कहा पत्रकारिता ने उनकी पहचान दी है। यह पहचान मिहनत के बदौलत बनी है। उन्होंने कहा कठिन से कठिन काम भी ईमानदारी पूर्वक किया जाये तो सफलता मिलने की गारंटी है। वे मिहनत के बदौलत ही पत्रकारिता में मुकाम तक पहुंचे।

महिला सशक्तिकरण समिति की बैठक

समाजसेवी और कमजोर वर्ग की महिलाओं और बच्चियों के लिए अनवरत कार्य करने वाली पद्म श्री सुधा वर्गीज ने कहा महिला सशक्तीकरण के बिना संतुलित समाज का निर्माण असंभव है। वे 28 नवंबर, 2021 को आयोजित महिला सशक्तीकरण समिति की बैठक को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने मुसहर समाज की महिलाओं के बीच सशक्तीकरण के काम और सशक्त महिलाओं की जानकारी देते हुए कहा कि छपरा में आज इस समाज के 500 महिलाओं द्वारा लीज पर खेती कर अपने को सशक्त किया है। ऐसे कमजोर श्रेणी की महिलाओं के साथ जुड़कर हीं इनके लिए सशक्तीकरण का कार्य करना संभव होगा।

चर्चित शिक्षक और शिक्षा के क्षेत्र के प्रयोगधर्मी व ग्लोबल शिक्षक सम्मान से सम्मानित श्री सत्यम मिश्रा ने कहा कि शिक्षा में विध्वंस के बजाय शांति की शिक्षा को आज के छात्रों ने स्वीकार किया है। पुलवामा घटना के बाद छात्रों में मीडिया के खबरों के असर की चर्चा करते हुए कहा कि छात्रों में आक्रोश था, पर नए प्रयोग कर छात्रों में शांति की शिक्षा की ओर ले जाया गया। इस तरह के अपने सैकड़ों प्रयोगों की उन्होंने जानकारी दी जिससे उन्हें शांति की ओर अग्रसर करना संभव हो सका।

प्राधिकरण की गतिविधियां

(अक्टूबर–दिसंबर–2021)

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम

राज्य में विद्यालयों और स्कूली छात्रों/शिक्षकों की विभिन्न आपदाओं से सुरक्षा हेतु MSSP कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके लिए 16.12.2021 को रिसोर्स पर्सन की बैठक हुई। बैठक में जनवरी माह से मदरसा के फोकल शिक्षकों का ट्रेनिंग शुरू करने का निर्णय लिया गया। मगर, कोरोना संक्रमण के कारण कार्यक्रम में थोड़ा व्यवधान हुआ। Face to Face प्रशिक्षण कार्यक्रम बंद करना पड़ा।

कोरोना की स्थिति सामान्य होने के उपरांत इस कार्यक्रम को पुनः शुरू करने का प्रस्ताव है। सामान्य स्थिति बहाल होने के उपरांत Face to Face Training शुरू करने का प्रस्ताव है। ऑनलाईन प्रशिक्षण शुरू की जा रही है। निर्णय लिया गया है कि इस वर्ष 1000 शिक्षकों तथा 500 मदरसा शिक्षकों को प्रशिक्षित करना है।

अभियंताओं/वास्तुविदों/संवेदकों/राजमिस्त्रियों का भूकम्परोधी निर्माण तकनीक से संबंधित प्रशिक्षण

दिनांक 30 नवम्बर 2021 तक राज्य के सभी (38) जिलों के साथ साथ भूकम्पीय जोन V के 8 जिलों (किशनगंज, अररिया, सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी एवं सीतामढ़ी) में से दरभंगा एवं मधुबनी को छोड़ शेष 06 जिलों में भूकम्परोधी भवन निर्माण तकनीक पर अनुभवी राजमिस्त्रियों के सात दिवसीय प्रशिक्षण के दूसरे बैच का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार दिनांक 30 नवम्बर 2021 तक कुल 18,905 अनुभवी राजमिस्त्रियों को एवं 37 जिलों (समस्तीपुर को छोड़) में (मुख्यालय सहित) कुल 2633 असैनिक अभियंताओं को भवनों के भूकम्परोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग तकनीक विषय पर प्रशिक्षित किया जा चुका है।

दिनांक 02 सितम्बर 2021 को राजमिस्त्रियों के अगामी प्रशिक्षणों के लिए प्रशिक्षकों/भावी प्रशिक्षकों के कुल 16 राजमिस्त्रियों का एक दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स प्राधिकरण के सभा कक्ष में सम्पादित किया गया। बिहार पंचायत चुनाव 2021 घोषित होने के कारण प्रशिक्षण कार्यक्रम तत्काल स्थगित किया गया है।

जीविका दीदियों का "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर तीन दिवसीय "मास्टर ट्रेनर्स" प्रशिक्षण

जीविका दीदियों का "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर तीन दिवसीय राज्यस्तरीय मास्टर ट्रेनर के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। "प्राकृतिक आपदाएं" विषय पर 21 से 23 दिसम्बर 2021 तक मुंगेर, नालंदा, नवादा, बांका एवं वैशाली के 29 मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण में क्षेत्रीय समन्वयक एवं सामुदायिक समन्वयकों ने भाग लिया। इन प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के माध्यम से जीविका दीदियों को जागरूक करने का लक्ष्य है। दिसम्बर 2021 तक सात बैचों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 186 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया है, जो इस प्रकार हैः–

क्र. सं.	दिनांक	प्रतिभागी जिला	प्रतिभागियों की संख्या
1	10–12 अगस्त, 2021	पूर्णिया, अररिया, मधेपुरा एवं मधुबनी	27
2	01–03 सितंबर, 2021	मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, एवं बिहारशरीफ	22
3	14–16 सितंबर, 2021	गोपालगंज, प. चंपारण, पूर्वी चंपारण एवं सिवान	28
4	20–22 अक्टूबर, 2021	भागलपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, बेगुसराय एवं कटिहार	31
5	16–18 नवम्बर, 2021	सहरसा, सुपौल एवं किशनगंज	17
6	07–09 दिसम्बर, 2021	सहरसा, सुपौल एवं किशनगंज	32
7	21–23 दिसम्बर, 2021	मुंगेर, नालंदा, नवादा, बांका एवं वैशाली	29
		कुल	186

''सुरक्षित तैराकी'' प्रशिक्षण मॉड्यूल में संशोधन के लिए बैठक

"सुरक्षित तैराकी'' प्रशिक्षण मॉड्यूल में आवश्यक संशोधन के लिए प्रतिभागियों की 28 दिसम्बर 2021 को बैठक हुई। बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए :–

1. मॉड्यूल के "बाल सुरक्षा के मुद्दों पर समुदाय का संवेदीकरण" अध्याय की समीक्षा कर तैराकी प्रशिक्षण से संबंधी आवश्यक बिन्दुओं को रखा जाएगा।

2. कोरोना एवं अन्य महामारियों की रोकथाम के उपायों के बारे में अलग से एक अध्याय को प्रशिक्षण मॉड्यूल में जोड़ा जाएगा।

3. मॉड्यूल के "डूबने से बचाव के उपरांत प्राथमिक उपचार" अध्याय से हड्डी टूटने पर प्राथमिक उपचार एवं रक्तस्राव रोकने की विधि आदि विषयों की समीक्षा कर आवश्यक संशोधन किया जाएगा।

4. मौसम एवं कोविड की मौजूदा परिस्थितियों को ध्यान में रख कर समुदाय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम फरवरी से जून एवं सितम्बर से अक्टूबर माह तक किया जाएगा।

5. मानसून के दौरान मास्टर ट्रेनर, मुखिया/सरपंच, शिक्षक आदि के सहयोग से समुदाय स्तर पर डूबने की घटनाओं की रोकथाम के उपायों के संबंध में प्रचार–प्रसार किया जाएगा।

6. समुदायिक प्रशिक्षण स्थल पर आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु पुलिस प्रशासन का सहयोग प्राप्त किया जाएगा। प्रशिक्षण स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से होम गार्ड्स के जवानों को प्रशिक्षित किया जाएगा।
इस कार्य में स्थानीय मुखिया/सरपंच का सहयोग लिया जाएगा।

7. समुदाय स्तर पर बालक/बालिकाओं के 12 दिवसीय प्रशिक्षण के स्थान पर 15 दिवसीय किए जाने पर सहमति बनी।

8. समुदाय स्तर पर बालक/बालिकाओं के प्रशिक्षण हेतु स्थल का चयन मास्टर ट्रेनर के साथ–साथ अन्य संबंधित अंचल अधिकारी/प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन में ही किया जाएगा। इस कार्य हेतु एस0डी0आर0एफ0/एन0डी0आर0एफ0 का भी सहयोग लिया जा सकता है।

9. प्रशिक्षण मॉड्यूल के प्रथम चरण में नदियों के 05 कि0मी0 की परिधि के गाँवों/मुहल्लों के बच्चों को शामिल किया जाना है, साथ ही तालाबों, नहरों एवं गड्ढों में भी डूबने से होने वाले मौत की बड़ी संख्या को देखते हुए नदियों के साथ–साथ तालाबों, नहरों आदि के आस–पास के बालक/बालिकाओं को प्रशिक्षण में शामिल करने का निर्णय लिया गया।
10. प्रशिक्षण मॉड्यूल में मास्टर ट्रेनर की अहर्ता एवं दक्षता जाँच के लिए दिए गए मानदण्डों को पुनःसमीक्षा करने पर सहमति बनी।
11. प्रशिक्षण के उपरांत प्राधिकरण स्तर से ही प्रमाण पत्र उपलब्ध कराए जाने पर विमर्श किया गया।
12. जल की गुणवत्ता जाँच की विधियों को प्रशिक्षण मॉड्यूल में समाहित किया जाएगा।
13. बंशी जाल एवं झग्गड़/कांटा से डूबे हुए व्यक्ति/सामग्रियों की तलाश को लेकर सिर्फ राज्य स्तर पर मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षित किया जायेगा। उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर प्रशिक्षण मॉड्यूल में संशोधन के लिए एक समिति का गठन किया गया।

बहु-आपदा जोखिम एवं न्यूनीकरण के लिए सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण

बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः हमारे गाँवों, पंचायतों, प्रखण्डों एवं जिलों में विभिन्न प्रकार की आपदाएं आती रहती हैं। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें तो वे अपने पंचायत, को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य हेतु प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के प्रत्येक पंचायत के 10–10 उत्साही_ नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओं के प्रत्युत्तर हेतु तैयार कर रहा है ताकि आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करने में वे अपने समुदाय के मददगार हो सकें। उद्देश्य यह भी है कि अपने गाँव, पंचायत, प्रखंड एवं जिला स्तर पर विभिन्न आपदाओं की प्रवणता की जानकारी हासिल कर उन आपदाओं के जोखिम–न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में समुदाय की सहायता के लिए स्वयं को तैयार करें। इसके मद्देनजर दिसम्बर माह में दिनांक 13.12.2021 से 25.12.2021 तक मुजफ्फरपुर जिला के कुल 40 स्वयंसेवकों को 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कोविड–19 के दृष्टिगत सामाजिक दूरी का पालन करते हुये 20–20 की संख्या में दो क्लासों में प्रशिक्षित किया गया है। दिसम्बर माह तक पूर्णिया एवं मुजफ्फरपुर जिले के कुल 200 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। प्रशिक्षण में निम्न विषयों को समाहित किया गया हैः–

- बाढ़ से बचाव-पूर्व, दौरान व बाद
- आपदाओं के परिप्रेक्ष्य में बिहार राज्य की संवेदनशीलता
- घरेलू संसाधन से राफ्ट तैयार करना
- जीवन रक्षा तकनीक
- गांठों को सही प्रयोग एवं रस्सी का उचित उपयोग
- नदी/तालाब में डूबने से बचाव की तकनीक
- डूबने से बचाने की विधियां
- दुर्घटना मे घायल को सुरक्षित ले जाने की विधि
- विभिन्न दुर्घटनाओं में अस्पताल पूर्व चिकित्सा

- भूकंप की प्रवणता
- भूकंप के छद्म अभ्यास (मॉकड्रिल) के स्टेज
- सी0पी0आर0 प्रक्रिया
- अगलगी के प्रकार, आग बुझाने के दल और तरीके
- ठनका, लू और शीतलहर के दौरान बचने का सबसे सुरक्षित तरीका
- सुरक्षित नौका परिचालन एवं जल स्वच्छता
- जल–जीवन–हरियाली
- बाल विवाह, दहेज उन्मूलन और नशा मुक्ति
- महिला एवं बाल स्वास्थ सुरक्षा
- मनोसामाजिक समस्याएं
- सर्पदंश प्रबंधन
- सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के उपाय

गंभीर रेल दुर्घटनाओं के प्रबंधन में विभिन्न एजेंसियों की भूमिका के लिए बैठक

गंभीर रेल दुर्घटनाओं के प्रबंधन में विभिन्न एजेंसियों की भूमिका के निर्धारण एवं समन्वय के उद्देश्य से तैयार की गई SOP के अद्यतन प्रारूप पर विमर्श हेतु मा0 उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में दिनांक 30.12.2021 को प्राधिकरण सभागार में बैठक हुई। बैठक में प्राधिकरण के मा0 सदस्य, सचिव तथा आपदा प्रबंधन विभाग, रेलवे सुरक्षा बल, जिला प्रशासन, पटना, एस0डी0आर0एफ0, एन0डी0आर0एफ0, अग्निशमन सेवा, रेलवे पुलिस एवं बिहार पुलिस आदि के पदाधिकारियों की आवश्यक बैठक हुई। बैठक मे शामिल अधिकारियों ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। अधिकारियों के सुझावों पर SOP को अद्यतन किया जा रहा है। रेल दुर्घटना होने पर दुर्घटना में घायल यात्रियों को राहत पहुंचाने एवं बेहतर समन्वय हेतु संबंधित एजेंसियों/हितधारकों का प्रशिक्षण एवं मॉकड्रिल किया जाना आवश्यक है। प्रशिक्षण एवं मॉकड्रिल कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक समिति का भी गठन किया गया है।

जिला न्यायालय, मुंगेर के आपदा प्रबंधन कार्य योजना" के लिए बैठक

दिनांक 16.12.2021 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश, मुंगेर की अध्यक्षता में आपदा प्रबंधन कार्ययोजना के लिए बैठक हुई। बैठक में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से योजना के प्रारूप में विषय वस्तु को आपदा जोखिम न्यूनीकरण के परिपेक्ष्य में अभिमुखिकरण किया गया। मुंगेर जिला न्यायालय परिसर के दृष्टिगत संभावित आपदाओं यथा–आगजनी, बाढ़, भूकम्प, वज्रपात, भगदड़, हिंसात्मक गतिविधियां, संक्रामक बीमारियां आदि को प्राथमिकता के आधार पर परिसर अवस्थित जोखिम वाले स्थानों यथा– रिकार्ड रूम, हाजत आदि की पहचान कर संवेदनशीलता का आकलन किया गया। आपदाओं को चिह्नित करते हुए सुरक्षा के उपाय संबंधी पूर्व तैयारी, शमन के उपाय एवं जागरूकता संबंधी गतिविधियों को कार्य योजना में समाहित किया गया ।

उपस्थितिः–

1. अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, मुंगेर
2. सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकार (DLSA), मुंगेर
3. न्यायाधीश, प्रभारी प्रशासन, मुंगेर
4. श्री नीरज कुमार सिंह, सीनियर कंसल्टेन्ट, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
5. श्री कुलभूषण कुमार गोपाल, वरीय संपादक, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
6. श्री अजय सिंह, जिला अग्निशाम पदाधिकारी, मुंगेर

मुजफ्फरपुर के बेला औद्योगिक क्षेत्र में अंशुल स्नैक्स में ब्यॉलर विस्फोट

दिनांक–26.12.2021 को बेला औद्योगिक क्षेत्र मुजफ्फरपुर फेज–2 प्लॉट संख्या–एन०एस०–5 पर स्थित अंशुल स्नैक्स एवं विवरेज प्रा०लि० में ब्यॉलर बिस्फोट हो गया। यह कंपनी नूडल्स का उत्पादन करती है घटना संबंधी अध्ययन के लिए प्राधिकरण स्तर पर एक टीम का गठन किया गया जिसमें आपदा प्रबंधन विभाग, अग्निशाम सेवाएं, राज्य आपदा मोचन बल एवं बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के दो–दो प्रतिनिधियों ने घटना स्थल का भ्रमण किया। एकत्रित जानकारी के अनुसार यह इकाई सर्वप्रथम बियाडा के द्वारा वर्ष 2007 में फ्लोर मिल आटा, सूजी, मैदा मालिक श्री रामपूजन सिंह को आंवटित की गई थी। वर्ष 2018 में इसे सर्वश्री अंशुल स्नैक्स विवरेज प्रा0लि0 को हस्तान्तरित की गयी जिसमें M/S फारवेस वाइनेक प्रा0 लि0 पुणे द्वारा वर्ष 2019 में निर्मित ब्यॉलर स्थापित किया गया था।

घटना स्थल से मिले तथ्यों के अनुसार ब्यॉलर फटने से आस–पास के क्षेत्रों के कई भवन क्षतिग्रत हो गये। इकाई के पास के सटे ईंट की दिवारें ध्वस्त हो गये। सेड का हिस्सा पूर्णतः क्षतिग्रस्त हो गया। इस इकाई के समीप के दूसरे इकाइयों जैसे धरती एग्रो चूरा मिल एवं प्रभात खबर आदि पर ब्यॉलर के क्षतिग्रस्त हिस्से के गिरने से क्षति हुई। ब्यॉलर के हिस्से लगभग 200–500 मी0 दूर तक गिरा। इससे आंशिक रूप से कई घरें क्षतिग्रस्त हो गई। इस घटना में दो मजदूरों की मृत्यु हो गई। इस इकाई के नजदीक के बसावट (ग्रामीण क्षेत्र) के भी कुछ भवनों में अत्यधिक आवाज से घरों के शीशे आदि क्षतिग्रस्त हो गये।

अस्पताल अग्नि सुरक्षा

'अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत '16 बिंदु अग्नि प्रवणता सूचकांक' के आधार पर दिसम्बर माह में राज्य के कुल 209 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया जिसमें 69 सरकारी एवं 140 निजी अस्पताल शामिल हैं। इन अस्पतालों का निरीक्षण प्राधिकरण के दिशा निर्देश में अग्निशाम सेवाएं के अधिकारियों द्वारा किया गया। यह इस प्रकार है:–

माह दिसम्बर 2021 में अस्पतालों/नर्सिंग होमस् के भवनों में फायर ऑडिट का ऑकड़ा।

क्र0स0	जिला का नाम	कोविड अस्पताल			नन कोविड अस्पताल		
		सरकारी	निजी अस्पताल	कुल	सरकारी	निजी अस्पताल	कुल
1	पटना	00	00	00	01	36	37
2	नालंदा	00	00	00	00	09	09
3	रोहतास	00	00	00	00	00	00
4	भभुआ	00	00	00	00	24	24
5	भोजपुर	00	00	00	01	01	02
6	बक्सर	00	00	00	01	01	02
7	गया	00	00	00	00	00	00
8	जहानाबाद	02	00	02	00	04	04
9	अरवल	00	00	00	00	00	00
10	नवादा	00	00	00	00	00	00
11	औरंगाबाद	00	00	00	05	09	14
12	छपरा	00	00	00	00	00	00
13	सिवान	01	00	01	19	00	19
14	गोपालगंज	00	00	00	16	00	16
15	मुजफ्फरपुर	00	00	00	08	02	10
16	सीतामढ़ी	00	00	00	00	01	01
17	शिवहर	00	00	00	00	00	00
18	बेतिया	00	00	00	00	01	01
19	बगहा	00	00	00	00	01	01
20	मोतिहारी	00	00	00	00	02	02
21	वैशाली	00	00	00	00	00	00
22	दरभंगा	00	00	00	00	06	06
23	मधुबनी	00	00	00	00	08	08
24	समस्तीपुर	00	00	00	00	00	00
25	सहरसा	00	00	00	00	00	00
26	सुपौल	00	00	00	00	00	00
27	मधेपुरा	00	00	00	00	03	03
28	पूर्णिया	00	02	02	00	01	01
29	अररिया	00	00	00	02	01	03
30	किशनगंज	00	00	00	00	01	01
31	कटिहार	00	00	00	05	02	07
32	भागलपुर	03	02	05	00	14	14
33	बनगछिया	01	00	01	00	00	00
34	बाँका	00	00	00	00	00	00
35	मुंगेर	00	00	00	00	00	00
36	लखीसराय	00	00	00	00	00	00
37	शेखपुरा	00	00	00	00	00	00
38	जमुई	00	00	00	00	06	06
39	खगड़िया	01	00	01	02	00	02
40	बेगुसराय	01	01	02	00	02	02
	कुल योग	9	5	14	60	135	195

आपात स्थिति में पशु प्रबंधनः पशुधन सहायकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण

आपदाओं से मानव ही नहीं बल्कि पशु भी प्रभावित होता है। आपदाओं की स्थिति में मानव के साथ–साथ पशुधन की भी बड़े पैमाने पर क्षति होती है। यद्यपि कि आपदाओं को घटित होने से रोका तो नहीं जा सकता है, किन्तु इनसे होने वाली क्षति को कम करने के लिए पशुधन सहायकों का कौशल विकास एवं आपदाओं और खतरे की पहचान कर पशुधन की सुरक्षा का समुचित प्रबंधन किया जा सकता है।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग एवं बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 13.08.2019 को बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यशाला में राज्य पशु आपदा प्रबंधन योजना का प्रारूप तय किया गया। ''आपात स्थिति में पशु प्रबंधन'' विषय पर पशु चिकित्सकों को प्रशिक्षित करने के तर्ज पर पशुधन सहायकों को भी प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग एवं बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के सहयोग से फरवरी, 2021 में प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ किया गया। इस प्रशिक्षण में पशुधन सहायकों को बहु–आपदाओं की स्थिति में आपदा के पहले, आपदा के दौरान एवं आपदा के बाद में कैसे पशुओं की सुरक्षा एवं प्रबंधन किया जाय की जानकारी दी जाती है। माह अक्टूबर, 2021 तक कुल 11 बैचों में 276 पशुधन सहायकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। यह इस प्रकार हैः–

बैच संख्या	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या
1	15—17 फरवरी, 2021	30
2	18—20 फरवरी, 2021	27
3	05—07 अप्रैल, 2021	30
4	14—16 जुलाई, 2021	30
5	17—19 जुलाई, 2021	29
6	23—25 अगस्त, 2021	28
7	26—28 अगस्त, 2021	26
8	7—9 अक्टूबर, 2021	12
9	20—22 अक्टूबर, 2021	21
10	25—27 अक्टूबर, 2021	23
11	28—30 अक्टूबर, 2021	20
	कुल	276

NDMA और BSDMA Heat Wave पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

Heat Wave पर पटना में राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित करने के लिए माननीय सदस्य श्री पी0 एन0 राय की अध्यक्षता में 06.12.2021 को बैठक हुई। मा. सदस्य श्री राय ने कार्यशाला आयोजन हेतु विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। कार्यशाला आयोजन के लिए माननीय उपाध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन में तैयारी की जा रही है। कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु संस्थान स्तर पर विभिन्न समूहों का गठन किया गया है। इसके लिए चार समीक्षात्मक बैठकें हो चुकी हैं। NDMA से भी समन्वय बनाकर निरंतर कार्य किये जा रहे हैं। 20 दिसम्बर को पुनः तैयारी की समीक्षा हुई। बढ़ते कोरोना संक्रमण को देखते हुए फिलहाल कार्यक्रम को स्थगित करने का निर्णय लिया गया है।

जिला आपदा प्रबंधन योजना के लिए समीक्षा बैठक

रोहतास एवं वैशाली जिले की जिला आपदा प्रबंधन योजना को संबंधित एजेंसियों के सहयोग से दिनांक 9.12.2021 एवं 14.12.2021 को समीक्षा कर अध्यक्ष, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से अनुमोदन हेतु भेजा गया है। श्री पी.एन.राय, माननीय सदस्य की अध्यक्षता में जिला आपदा प्रबंधन योजना के सभी अध्यायों पर आपदा प्रबंधन विभाग से प्राप्त सुझावों पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में संबंधित सूचनाओं को संकलित व अद्यतन किया गया। बैठक में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से जिला प्रभारी, प्रोग्रामर, आपदा प्रबंधन विभाग से विशेष कार्य पदाधिकारी और संबंधित एजेंसी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नवादा और जमुई जिले द्वारा स्वीकृत जिला आपदा प्रबंधन योजना राज्य स्तर पर प्राप्त हो चुकी है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी

बिहार राज्य आपदा संसाधन नेटर्वक (BSDRN) की समीक्षा

राज्य में BSDRN पोर्टल पर सभी जिलों के द्वारा संसाधनों की इलेक्ट्रॉनिक इन्वेंटरी तैयार की जा रही है ताकि आपदाओं के दौरान विभिन्न संसाधनों की उपलब्धता की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके। आपदा के वक्त यह संसाधन कहां उपलब्ध हैं तथा इसे कैसे प्राप्त किया जाए संबंधी जानकारी एवं संपर्क फोन नम्बर समेत अन्य जानकारी इस पोर्टल से प्राप्त होगा।

इस क्रम में औरंगाबाद जिला की समीक्षा माननीय सदस्य श्री पी.एन.राय, की अध्यक्षता में दिनांक 15.12.2021 को BSDMA सभाकक्ष में हुई जिसमें औरंगाबाद जिला आपदा प्रबंधन के नोडल ऑफिसर (ADM) तथा जिला कन्सलटेंट शामिल हुए। समीक्षा के दौरान कई त्रुटियाँ पाई गई जिसके निराकरण हेतु अग्रेतर कार्रवाई करने के लिए MoM जिलाधिकारी को प्रेषित किया गया। इस कार्य को त्वरित गति से पूरा करने हेतु जिला स्तर पर उचित निर्देश निर्गत करने का निर्देश दिया गया।

भविष्य में इस तरह की समीक्षात्मक बैठक प्रमंडल स्तर पर करने का प्रस्ताव दिया गया है ताकि सभी जिलों में इसके लिए त्वरित समीक्षा कर उन्हें उचित निदेश दिया जा सके।

BSDRN पोर्टल पर दिसम्बर, 2021 तक 34,437 के मानव बल समेत अन्य उपकरणों से संबंधित आंकड़े इस प्रकार हैः–

खोज एवं बचाव उपकरण :–	4989
कुशल जनशक्ति :–	12300
परिवहन :–	2264
खाद्य और जलस्त्रोत :–	5156
सुरक्षा और आश्रयः–	8905
आपातकालीन आपूर्ति और सेवाएं :–	823
कुल संख्या :–	**34,437**

Mass Messaging

बिहार एक बहुआपदा प्रवण राज्य है, जहां लगभग सभी तरह के प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदाएं घटित होती रहती हैं। यह राज्य जहां एक ओर लगभग हर वर्ष बाढ़ के प्रकोप झेलता है, वहीं दूसरी ओर सुखाड़, अग्निकांड, शीतलहर लू, वज्रपात आदि प्राकृतिक एवं गैर प्राकृतिक आपदाओं से राज्य का एक बड़ा भू–भाग प्रभावित होता है। भूकंप की दृष्टि से भी बिहार अति संवेदनशील राज्य है। प्राकृतिक आपदाओं को हम पूरी तरह रोक तो नहीं सकते, परंतु बेहतर सूचना प्रबंधन एवं इसके सुदृढ़ीकरण से लोगों को आपदा के प्रति सचेष्ट कर सकते हैं। इससे होने वाली क्षति को कम से कम करने में सहायता मिलेगी।

प्राधिकरण में उपलब्ध विभिन्न मोबाइल नंबर जैसे जिला पदाधिकारी DM (38), ADM (38), BDO (534), CO (534) और प्रशिक्षित फोकल टीचर (1542), नाव एवं नाव मालिक (3820), पंचायत जनप्रतिनिधि (चयनित–207429, गैर चयनित–435699), जीविका दीदी– (148890), आशा कार्यकर्ता (77542), आगनबाड़ी सेविका (45946) एवं प्राधिकरण द्वारा प्रशिक्षित अभियंताओं एवं राजमिस्त्रियों समेत अन्य लगभग 36 लाख नंबर पर विभिन्न आपदाओं के बारे में समय–समय पर सामूहिक संदेश संप्रेषण (मैसेजिंग) किया जाता है।

राष्ट्रीय हिन्दी दिवस

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण में पहली बार 14 सितंबर, 2021 को राष्ट्रीय हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में अतिथि कवियों के साथ साथ कई प्राधिकरण कर्मियों ने भी कविता पाठ कर अपनी साहित्यक क्षमता का परिचय दिया। इस आयोजन ने मातृभाषा, साहित्यक समस्याएं/कुरीतियों पर गहरा चोट भी किया। प्रस्तुत है हिन्दी दिवस के मौके पर पठित रचनाएं।

सच के बाद

सच के पीछे, सच के आगे, मिथ्या का साम्राज्य बड़ा है।
यूं तो इसके पांव नहीं है फिर भी पथ को रोक खड़ा है।।

जीवन बेबस छट पट करता, गपबाजी भी थमी नहीं थी।
सांसें टूट रही थी लेकिन, प्राण वायु की कमी नहीं थी।

साक्ष्य कहीं का कहीं पिरोकर, सच ढक लेने का कौशल।
जो विरोध में आये, उनका छिन्न-भिन्न कर देना दल बल।।

भ्रामक उनकी गौरव गाथा, कैसा कठिन समय है आया।
सच के बाद झूठ की माया, मानवता पर काली छाया।।

कब तक खुद को छलना होगा, अब तो इसे बदलना होगा।
श्रम को फिर से मान मिलेगा, सच को सम्मुख लाना होगा

जय प्रकाश मल्ल

सखी

दुःख भरी मेरी गगरी बस एक दुखी मैं, बाकी सुखी सारी नगरी ।
देखूं जब नव कोपंल मैं तड़पुं की ना क्यों हरषि मैं
सुख देख पराया ललसु मैं सब सुखी, क्यों खुश नहीं मैं?
टीस, कसक की चोट गहरी अतृप्त आशा पर मैं ठहरी
क्यों नहीं मैं सुखी? सखी तू ही कह री
चाहा कुछ , कुछ और मिला थोड़ा प्यार, ढेरों गिला
मुझे हमेशा अधूरा मिला रही चाह सुख की, पर दुःख ही मिला
सखी री देखुं जब करते प्यार किसी को हाथों में लेते हाथ किसी को जो चाहत थी
मेरी , जीते और किसी को तड़पुं, हाय ये सुख मिला मुझे ना क्यूँ?
बहन, बात चिंता की है गहन कर पूरा विचार मंथन जीवन अनमोल अनगिनत पल
क्या रहा नहीं कुछ भी अच्छा ? क्या रहा नहीं कुच्छ भी सच्चा ?
पकड़ दुखो का झूला तुम्हें दिया सुख भी भुला ।
बहन री, गिनती में जितने दुःख उतने ही सुख
पकड़ सुख, छूटने दे दुःख कौन किससे ज्यादा दुखी?
कौन किससे ज्यादा सुखी? जो पकड़ो सुख तो तुम सुखी
जो पकड़ो दुःख तो तुम दुखी ना कोई तुमको करता खुश
ना कोई तुमको देता दुःख जो तुम चाहो तो तुम सुखी
जो तुम चाहो तो तुम दुखी ना मिला, जो चाहा
बदले में मिला अनचाहा वो भी तो था अनोखा
जो तुमने ना था देखा ना साचा जो ना पाया
उसकी याद नाइंसाफी है जो मिला उसके साथ
जो मिला दिखेगा ना सुन्दर जब तक रहेगा खोने का गम
जो पकडे रहो गम दोनों हाथ कैसे पकड़ेंगे सुख तुम्हारे हाथ

आशुतोष कुमार सिन्हा

खंडहर

यह खंडहर हमेशा ऐसा नहीं था कल तक इसमें जीवन था स्पंदन था यह घर कहलाता इस घर में रहते थे कई लोग जिन्हें माई, बाबू जी कहते थे कई कमरे थे जिन्हे दलान, पूजा घर, चऊका, बिचला कमरा भण्डार घर और सिरा घर कहते थे दलान जिसमें बैठ सुनता रहता था बाबूजी का उपदेस चौका से आती रहती माई के बनाए खाने की खुशबू बीचला कमरा जिसमें सुनता था राजा रानी और परियों की कहानी पूजा घर जहां से आती घंटियों और मंत्रोच्चार की आवाजें एक रहस्यमई शीरा घर भी था जिसमें विराजमान थे कुलदेवता भण्डार घर में थी अनाजों से भरी दो कोठी और एक पुरानी सन्दूक एक आंगन भी था आंगन में था एक टूटा खटिया जिस पर लेटा करता घंटो चांद-तारों से यार उसी आंगन में था तुलसी चबूतरा सदा सुहागन का पौधा दो बड़मसिया अमरूद के पेड़ आँगन से ही सुबह शाम आती तोता मैना के साथ नन्हीं चिड़ियाँ की कलरव तुलसी चौरा से आती अगरबत्ती की भीनी खुशबू साथ गड़े ध्वजा के पताखे की फरफराहट घर के बाजू में था एक बगीचा, कुट्टी मशीन और बथान कुट्टी मशीन की आवाज़ों के बीच दिखती बथान से गाय बैलों की निहारती आंखें दरवाज़े के बाहर था अष्ठी और ओसारा एक पुरानी बैलगाड़ी अष्ठी पर लगता अपनों की बैठकी पुरानी बैलगाड़ी से जुड़ी थी बहुतों की यादें कमरे और आंगन के बीच था एक ओसारा जहां बाएं तरफ़ थी ढेंकी, जांता भरी दोपहरी ओसारे से आती ढेंकी जातें की आवाजें साथ ही चाची और बुआ की गीतों की गुनगुनाहट और उसके दूसरे कोने में था एक धान उसनने का चूल्हा उस चूल्हे से चटकती लकड़ियों के आवाज़ के साथ दिखती मटमैली धुएं अब धुंधलके यादों में रह गया है वह घर उसकी दीवारें खोई स्मृतियों का पंख़ लगा लौटना चाहता हूं खंडहर से घर के तरफ़ तो फ़िर से जीवित हो जाती है खंडहर टूटे खंडहरों के बीच आकार लेने लगता है एक घर बनने लगती है उसकी दीवारें उसके कमरें होने लगता है वहां रहने वालों के जीवित होने का अहसास लेकिन आकार लेने के जीवित होने पहले ही टूट जातें है स्मृतियों के पंख।

रचनाकार - योगेश कुमार

पाठ-आशुतोष कुमार सिन्हा

क्यों आज विधाता सोता है

क्यों आज विधाता सोता है।
इंसान यहां पर रोता है
भक्तों की बली दी जाती है
बोझिल धरा थर्राती है

खून की होली होती है
बंदूक की बोली होती है
मानव को काटा जाता है
लौट दानव जश्न मनाता है

चोरी बेईमानी होती है
नेक निलामी होती है
क्यों बईमानों की बस्ती में
ईमान कहीं खो जाता है।
क्यों आज विधाता.....

माँ को लूटा जाता है।
बहनों को फूंका जाता है।
हम धृतराष्ट्रों की दुनिया में
संजय गूंगा बन सो जाता है
क्यों आज विधाता.....

हजारों चीर हरण होती है
लाखों अबला रोती है।
दुःशासन हाथ बढ़ाता है
क्यों कृष्ण खड़ा मुस्काता है।
क्यों आज विधाता.....

इस मानव के आतंक से
दानव का दिल हिल जाता है।
क्यों आज विधाता सोता है।
इंसान यहां पर रोता है।

कुन्दन कुमार कौशल
आप्त सचिव (बि.रा.आ.प्र.प्रा.), मा. उपाध्यक्ष

शुभकामना है बेटी

मंदिर में जलती दीपशिखा बेटी है, मस्जिद में गूंजती अजाँ भी है,
गुरूद्वारे की गुरूवाणी भी, चर्च के घंटे की ध्वनि भी,
गीता का पवित्र आख्यान है बेटी।

जो जननी के आंगन नन्हीं कली सी जन्मी है, कभी कली सी मुस्काई तो कभी फूल बनी है,
परी सी बेटी, गुलाब की पँखुड़ी सी लगती है, संबंधों के पवित्र रेशम की डोर भी है बेटी,
चमकती हीरे की कनी बेटी है,

कभी चौरे पर सजी तुलसी मैया है, कभी दहलीज की रँगोली भी है, है पूजा की रोली सी
जो सबके माथे पर चमकती है ईशु वंदना का वरदान है बेटी, कभी कर्म भूमि में वीरांगना भी है,
त्याग, तप, तपस्यागुणों की खान भी है,
माँ के ममतामयी आँचल से निकली, पूर्ण जीवन का वरदान है बेटी।

पर प्रश्न है मेरा इस समाज से क्या बेटी के लिए आज सुरक्षित है माँ की कोख?
लड़की है इसलिए आज जनम से पूर्व ही मार दी जाती हैं क्या यही मेरी नियति है?

मन के भीतर से कोई बोल रहा है, पाप का यह कलंक कब तक सहोगी तुम
अब इस समाज के हर महिषासुर का वध करो, दुर्गा का रूप धारण कर लो,
नहीं तो मानवता का चक्र थम जायेगा, फिर कोई मानव कैसे जन्म ले पायेग?

उषा मिश्र द्वारा रचित
एवं चन्द्र नाथ मिश्र (बि.रा.आ.प्र.प्रा.) द्वारा प्रस्तुत (पठित)

जल और वायु है जीवन का आधार

जल और वायु है जीवन का आधार
क्या पौधे, क्या पक्षी क्या जानवर, क्या इंसान
बिना इनके संभव नहीं है जीवन धरती माता
चीख रही चिल्ला रही रहम करो, रहम करो
मानव तुम दानव बन रहे विकास के नाम पर
जलवायु परिवर्तन कर रहे।
जल और वायु प्रदूषण की मार अब छिपा
नहीं है संसार आपदाओं की भी पड़ रही मार
जीना दुश्वर है फिर भी मानवता नहीं शर्मसार
संयुक्त राष्ट्र की दो डिग्री तापमान वृद्धि की
चेतावनी मानव कर रहा अनसुनी पिघलते
गलेशियर, बढ़ता समुद्र तल कर रही कोस्टल
फ्लडिंग निगल रही शहरों को कटते जंगल,
विलुप्त होती जैव विविधता, मचा है चारों ओर हाहाकार
हे मानव अब तो ठहर जा और कर विचार
अगली पीढ़ी की सोच, और मत कर ज्यादा
अत्याचार धरती माता कर रही चित्कार
मानव तेरे पास ही है इसका उपचार
रेडयूस, रीयूज, रीसाइकिल का मंत्र
कार्बन फुटप्रिंट छोटा कर नहीं तो शीघ्र
है अंत, कुछ भी नहीं अनंत जल-जीवन
हरियाली है संगीत सौर उर्जा के उपयोग
से होगी जीत धरती माता को चढ़ा है बुखार,
अब आपदा प्रबंधन ही है सही उपचार
मानव जब जागेगा, तब प्रदूषण भागेगा,
और कोरोना भी हारेगा मिलेगी जीवन
को नयी लय जलवायु परिवर्तन पर होगी विजय

दिलीप कुमार, वरीय सलाहकार
(बि.रा.आ.प्र.ग्रा.)

हिन्दी हमारी आन है, हिन्दी हमारी शान है,
हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है,
हिन्दी हमारी वर्तनी, हिन्दी हमारा व्याकरण,
हिन्दी हमारी संस्कृति, हिन्दी हमारा आचरण,
हिन्दी हमारी वेदना, हिन्दी हमारा गान है,
हिन्दी हमारी आत्मा है, भावना का साज है,
हिन्दी हमारे देश की हर तोतली आवाज है,
हिन्दी हमारी अस्मिता, हिन्दी हमारा मान है,
हिन्दी निराला, प्रेमचंद्र की लेखनी का गान है,
हिन्दी में बच्चन, पंत, दिनकर का मधुर संगीत है,
हिन्दी में तुलसी, सूर, मीरा, जायसी की तान है,
जब तक गगन में चांद, सूरज की लगी बिंदी रहे,
तब तक वतन की राष्ट्र भाषा ये अमर हिन्दी रहे,
हिन्दी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन अमिट पहचान है,
हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।

श्रीमती सुम्बुल अफरोज,
वरीय तकनीकी सहायक, (बि.रा.आ.प्र.प्रा.)
(कवि अंकित शुक्ला की रचना)

राष्ट्र के माथे की बिन्दी है ये हिन्दी

संस्कृत की एक लाडली बेटी है ये हिन्दी।
बहनों को साथ लेकर यह चलती है ये हिन्दी।।
सुन्दर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है
ओजस्वनी है और अनूठी है ये हिन्दी।
पाथेय है, प्रवास में परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने का सांकल है ये हिन्दी।
पढ़ने और पढ़ाने में सहज है ये सुगम है
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है
कवि सुर के सागर की गागर है ये हिन्दी।
बागेश्वरी का माथे पर बदहस्त है,
निश्चय ही वंदनीय माँ सम है ये हिन्दी
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है
उसको भी अपनेपन से लुभाती ये हिन्दी
यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिन्दी है ये हिन्दी

मार्कंडेय राय,
मा. सदस्य श्री राय के नि.व.लि.
(बि.रा.आ.प्र.प्रा.)

शीर्षक– क,ख,ग,घ

मात्र क,ख,ग,घ नहीं है हिन्दी। वैज्ञानिक साँचे में ढली है हिन्दी।
भिन्न भिन्न उप बोली रंग रंगीली। फिर भी सरल सहज है हिन्दी।
अन्य भाषाओं को आत्मसात कर वैश्विक बाजार में पहचान है हिन्दी।।
मात्र क,ख,ग,घ नहीं है हिन्दी।
राष्ट्रीयता के सूत्र में बंधकर भारत का अभिमान है हिन्दी।।
जीवन जीने की परिभाषा है हिन्दी जन जन के कंठ में बसी है हिन्दी।।
अश्वमेघ यज्ञ की सृष्टि है हिन्दी राष्ट्रध्वज की भाँति गरीमा है हिन्दी।।
विश्व पटल पर ईश्वर के स्वर की अनुगूँज एवं मुस्कान है हिन्दी।।
मात्र क,ख,ग,घ नहीं है हिन्दी।

बालेन्दु कुमार दूबे
कार्यालय परिचारी,
(बि.रा.आ.प्र.प्रा.)

आहिस्ता की जिंदगी

आहिस्ता चल जिंदगी, अभी।
कई कर्ज चुकाना बाकी है।।
कुछ दर्द मिटाना बाकी है।
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

रफ्तार में तेरे चलने से।
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए।
रूठो को मनाना बाकी है।
रातो को हंसना बाकी है।

कुछ रिश्ते बनकर टुट गए।
कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गए।।
उन टूटे-छूटे रिश्तों के।
जख्मों को मिटाना बाकी है।।

कुछ हसरते अभी अधूरी है।
कुछ काम भी और जरूरी है।।
जीवन की उलक्ष पहेली को।
पुरा सुलझाना बाकी है।।

जब सांसो को थम जाना है।
फिर क्या खोना, क्या पाना है।।
पर मन के ज़िद्दी बच्चे को।
यह बात बताना बाकी है।।

आहिस्ता चल जिंदगी अभी।
कई कर्ज चुकाना बाकी है।।
कुछ दर्द मिटाना बाकी है।
कुछ फर्ज मिटाना बाकी है।।

श्रवण कुमार
कार्यालय परिचारी,
(बि.रा.आ.प्र.प्रा.)

खबरें तस्वीरों में

खबरें तस्वीरों में

आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

खबरें तस्वीरों में

खबरें तस्वीरों में

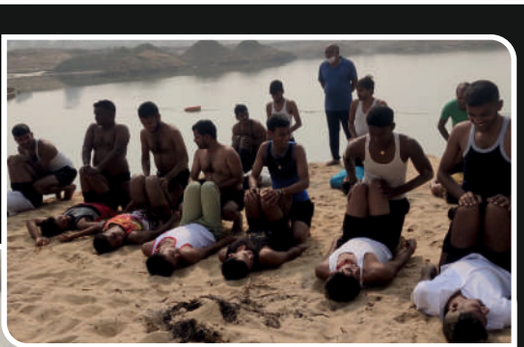

खबरें तस्वीरों में

वायु प्रदूषण की रोकथाम एवं बचाव

वायु प्रदूषण का प्रत्यक्ष प्रभाव मानव स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन, मौसम एवं पर्यावरण पर पड़ता है। निम्न उपायों से वायु प्रदूषण के कुप्रभावों को कम किया जा सकता है:-

वायु प्रदूषण से बचने के लिए क्या करें?

- घेरलू उपयोग में यथासंभव धुआं रहित चूल्हा, सौर ऊर्जा, एल.पी.जी. या बिजली से चलने वाले उपकरणों का उपयोग करें।
- वाहनों की ट्यूनिंग सही रखें ताकि वाहन उत्सर्जन से प्रदूषण की समस्या न हो।
- वाहन का प्रदूषण स्तर हर तीन महीने के अंतराल पर जाँच करवायें।
- डीजल एवं पेट्रोल चालित वाहन के स्थान पर विद्युत चालित इंजन को प्राथमिकता दें।
- निर्माण स्थलों पर पानी का नियमित छिड़काव सुनिश्चित करें।
- औद्योगिक इकाई अपने उत्सर्जन को मानक के अनुकूल बनाए रखें।
- जिस कमरे में कूलर, पंखा या एयर कंडिशनर जरूरी हो, वहीं चलायें, बाकी जगह बंद रखें।
- घरों में प्रदूषण का प्रभाव कम होता है। जब वातावरण में प्रदूषण अधिक हो तो घरों के अंदर रहें।
- वायु प्रदूषण से होने वाली हानियों के प्रति हम सब को सचेत रहना चाहिए।

क्या न करें?

- किसी प्रकार के कचरे को खुले में न जलाएं।
- बालू, गिट्टी, मिट्टी आदि का परिवहन ढक कर किया जाए। इसका भंडारण सड़क पर न हो।
- जरूरत न हो तो बिजली का इस्तेमाल न करें।
- कूड़ा–कचरा न जलाएं।

  फसलों के अवशेष को न जलाएं। इससे वायु प्रदूषण और बीमारी का खतरा उत्पन्न होता है।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

(आपदा प्रबंधन विभाग)

द्वितीय तल, पंत भवन, नेहरू मार्ग, पटना-800001

बिहार सरकार